मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा के पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया जी का अभिभाषण

दिनांक : 21 फरवरी 2024, बुधवार	**समय : 5.30 PM**	**स्थान : VKIC, उजान बाजार**

- पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष
  श्री कैलाश काबरा जी,
- विद्यांचल स्कूल, नलबाड़ी के प्रधानाचार्य
  श्री जितेंद्र जैन जी,
- मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा के अध्यक्ष
  श्री दिनेश गुप्ता जी,
- सचिव श्री संजय खेतान जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- मारवाड़ी सम्मेलन के अधिकारी एवं सदस्यगण,
- देवियों और सज्जनों,

आप सभी को मेरा नमस्कार !

राजस्थानी गीतों की पुस्तक **"सुर संगम"** के विमोचन कार्यक्रम में आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह मेरे लिए खुशी की बात है कि आज राजस्थान की संस्कृति से जुड़ी इस पुस्तक का विमोचन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं मारवाड़ी सम्मेलन की कामरूप शाखा को धन्यवाद देता हूं।

आज **"मायड़ भाषा दिवस"** के उपलक्ष्य में इस पुस्तक का विमोचन विशेष महत्व रखता है। मायड़ भाषा राजस्थान की मातृभाषा है। इसमें राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और गौरवमयी परंपरा की झलक दिखती है।

मातृभाषा वह भाषा होती है, जिसे कोई भी अपने दिल के करीब समझता है। इसके जरिए भावों की अभिव्यक्ति आसानी से की जा सकती है। मातृभाषा के बिना किसी देश की संस्कृति की कल्पना भी बेमानी है। मातृभाषा हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है। देशप्रेम की भावना उत्प्रेरित करती है।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर, हमारी मान्यताएं, मर्यादाएं भाषा में ही संरक्षित रहते हैं। हमारे साहित्य और संस्कृति का अस्तित्व, भाषा के बिना संभव ही नहीं है। इसलिए अगर हम अपनी मातृभाषा को भूलते हैं तो हम अपनी पहचान को खोते हैं। अपना आत्म सम्मान, अपना आत्म विश्वास भी खो देते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में समाज को देखें तो पता चलता है कि लोग विशेषकर युवा अपनी संस्कृति को दिन-प्रतिदिन पीछे छोड़कर आगे आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होते जा रहे हैं। वे अपनी मातृभाषा बोलने में झिझक महसूस करते हैं।

इस संदर्भ में मैं प्रसिद्ध राजस्थानी कवि कन्हैयालाल सेठिया के एक दोहे को उद्धृत करना चाहूंगा,

मायड़ भाषा बोलतां, आवै जिणनै लाज
इस्यां कपूतां सूं दुःखी आखौ देस समाज।।
निजभाषा सूं आणमणां, परभाषा सूं प्रीत
इसड़ा नुगरां री करै, कुण जग में प्रतीत।।

मित्रों,

राजस्थान अपनी समृद्ध संस्कृति और विरासत के लिए जाना जाता है। यहां के लोकगीत भी इसी समृद्ध संस्कृति का हिस्सा है। राजस्थान के लोकगीत ने केवल संगीतमय हैं, बल्कि इनमें राजस्थान जीवन और संस्कृति का गहरा समावेश है। राजस्थान में लोकगीतों की एक मजबूत और समृद्ध परंपरा है।

लेकिन पाश्चत्य संस्कृति के बढ़ते चलन के कारण यह परंपरा बिखर रही है। राजस्थान की भाषा, संस्कृति और लोक संगीत अपना आस्तित्व खोती जा रही हैं। हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए प्रयास करने होंगे।

मैं समझता हूं इसके संरक्षण के लिए न केवल राजस्थानी में संवाद की दरकार है, बल्कि इसके साहित्य एवं लेखन को भी बढ़ावा देने की आवश्यकता है। हमारी मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न तरह के सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाने चाहिए।

शिक्षा के माध्यम से भी मातृभाषा को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसी दृष्टिकोण से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्कूली शिक्षा में मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाने का प्रस्ताव किया गया है। मेरा मानना है कि मातृभाषा में शिक्षण होने पर सीखने की गति तेज होगी।

मातृभाषा के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए युवा पीढ़ी को इसके प्रति जागरूक करना होगा। नई पीढी को घर में जैसा माहौल मिलेगा वैसी ही भाषा वह सीखता है। अब अंग्रेजी एवं हिंदी का चलन अधिक हो गया है और ऐसे में राजस्थानी भाषा घरों में भी सिसकती दिखती है। नई पीढ़ी को हिंदी व अंग्रेजी जरूर सिखाइए, लेकिन उन्हें मायड़ भाषा से भी जोड़कर रखिए। व्यक्ति को आत्मिक संतुष्टि मायड़ भाषा से ही प्राप्त हो सकती है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजस्थानी भाषा और लोकगीतों को बढ़ावा देने तथा इसके संरक्षण के उद्देश्य से इस पुस्तक का निर्माण किया गया है। राजस्थान के लोकगीतों का संग्रह कर उसे पुस्तक का रूप देकर इसे संरक्षित करने का प्रयास सराहनीय है।

इसके लिए मैं पुस्तक **“सुर-संगम”** के संग्रहकर्ता श्री संदीप चमड़िया जी को धन्यवाद देता हूं। साथ ही इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा को भी धन्यवाद देता हूं। आशा है कि इससे समाज को और युवा पीढ़ी को राजस्थान की कला-संस्कृति के बारे में जानने और इसके संरक्षण एव विकास के लिए प्रोत्साहित होंगे।

मुझे गर्व है कि असम के मारवाड़ी समाज राज्य की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभाते आ रहे हैं। मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि यहां का मारवाड़ी समाज सामाजिक गतिविधियों में भी अपना सक्रिय योगदान देता है।

अंत में, मैं आशा करता हूं कि भविष्य में भी यहां का मारवाड़ी समाज राज्य के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में अपना योगदान देता रहेगा।

पुनः आप आप सभी को पुस्तक के विमोचन के लिए बधाई एवं बहुत-बहुत शुभकमानाएं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।